

विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा - षष्ठ

दिनांक -१० -०५ - २०२१

विषय -हिन्दी

विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -१ पथ मेरा आलोकित कर दो कविता के बारे में अध्ययन करेंगे ।

पथ = रास्ता

पर = पंख

आलोकित = प्रकाशित

प्रकाश से युक्त

निर्दिष्ट = निश्चित

तम = अंधकार, अँधेरा

मनोकामना = मन की इच्छा

नवल = नया, नवीन

वर = वरदान

रश्मि = किरण

विहग = पक्षी

पथिक = राही, राहगीर

उर = हृदय, लक्ष्य उद्देश्य।

पथ मेरा तम हर दो॥

संदर्भ - यह पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक कादम्बरी ' के 'पथ मेरा आलोकित कर दो' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता 'द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी' हैं।

भावार्थ - कवि कहते हैं कि हमें ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि- हे ईश्वर! नई सुबह की नई किरणों से मेरा रास्ता प्रकाशित कर दो, अर्थात् मुझे सन्मार्ग दिखा दो। हे ईश्वर! तुम मेरे हृदय का अंधकार दूर कर दो अर्थात् मुझे ज्ञान रूपी प्रकाश दिखाओ।

में नन्हा -सा पर दो॥

संदर्भ - हे भगवान! मैं छोटा-सा राहगीर संसार के रास्तों पर चलना सीख रहा हूँ। मैं छोटा-सा पक्षी संसार रूपी आकाश में उड़ना सीख रहा हूँ। मैं अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचना चाहता हूँ, अर्थात् अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता हूँ। इसकी प्राप्ति के लिए मुझे ऐसे पैर या पंख अर्थात् साधन दो कि मैं अपनी जीवन-यात्रा में सफल हो सकूँ।

पाया जग..... वर दो॥

संदर्भ - हे प्रभु! मुझे अब तक जो कुछ विरासत में मिला है और जितना कुछ मैं जीवन में प्राप्त करूँ, मेरी यह इच्छा है कि इन सबसे ज्यादा ही संसार के लिए छोड़कर जाऊँ। हे भगवान! मुझे ऐसा कल्याणकारी वरदान दो कि मैं अपने सत्कार्यों से इस संसार को स्वर्ग बना सकूँ।